सूरतुल अम्बिया-२१

सूर: अल-अम्बिया मक्का में उतरी और इस में एक सौ बारह आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया है,[1] फिर भी वे ग़फ़लत (की हालत) में मुँह फेरे हुए हैं।

२. उन के पास उन के रब की तरफ़ से जो भी नई-नई शिक्षायें (तालिमात) आती हैं, उसे वे खेलकूद में ही सुनते हैं।

३. उन के दिल पूरी तरह ग़ाफ़िल हैं और उन ज़ालिमों ने चुपके-चुपके काना-फूसीयाँ कीं कि वह तुम ही जैसा इंसान है, फिर क्या वजह है जो तुम आँखों देखे जादू में फंस जाते हो।

४. (पैग़म्बर ने) कहा, मेरा रब हर बात को जो आकाश और धरती में है अच्छी तरह से जानता है, वह बहुत सुनने वाला और जानने वाला है।

५. (इतना ही नहीं) बल्कि यह तो कहते हैं कि यह क़ुरआन परागन्दा ख़्वाबों का संग्रह (मजमूआ) है, बल्कि उस ने ख़ुद इसे गढ़ लिया है, बल्कि यह शायर है, वरना हमारे सामने यह कोई ऐसी निशानी लाते जैसे कि पहले ज़माने के पैग़म्बर भेजे गये थे।

سُورَةُ الأَنبِيَاءِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

اقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ﴿1﴾

مَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّن رَّبِّهِم مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿2﴾

لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ ۗ وَأَسَرُّوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَٰذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۖ أَفَتَأْتُونَ السِّحْرَ وَأَنتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿3﴾

قَالَ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿4﴾

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ﴿5﴾

[1] हिसाब के वक़्त का मतलब क़यामत है जो हर पल क़रीब हो रहा है, और हर वह चीज़ जो आने वाली है क़रीब है, हर इंसान की मौत ख़ुद उस के लिए क़यामत है, इस के सिवाय गुज़रे हुए वक़्त के मुक़ाबले क़यामत क़रीब है क्योंकि जितना वक़्त गुज़र चुका, बाक़ी रहने वाला वक़्त उस से कम है।

مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ اَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ ⑥

६. इन से पहले जितनी वस्तियाँ हम ने हलाक कीं ईमान से ख़ाली थीं, तो क्या अब यह ईमान लायेंगे?

وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ⑦

७. तुम से पहले भी जितने पैग़म्बर हम ने भेजे सभी इंसान थे,[1] जिन की तरफ़ हम वह्यी (प्रकाशना) नाज़िल करते थे, तो तुम इल्म[2] वालों से पूछ लो अगर ख़ुद तुम्हें इल्म न हो।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ ⑧

८. और हम ने उन्हें ऐसे शरीर न बनाये कि वे भोजन न करें और न वह सदा ज़िन्दा रहने वाले थे।

---

[1] यानी सभी नबी मर्द थे, न कोई मानव जाति के सिवाय कोई नबी आया, और न कोई मर्द के सिवाय, यानी नबूअत इंसानों के साथ और इंसानों में मर्दों के साथ ख़ास तौर से रही है। इस से मालूम हुआ कि कोई औरत नबी नहीं हुई, इसलिए कि नबूअत भी उन कर्तव्यों (फ़रायेज़) में से है, जो औरत के फ़ितरी और तबई अमलों के दायरे से बाहर है।

[2] अहले ज़िक्र (ज्ञानी लोग) से मुराद किताब वाले लोग हैं, जो पहले की आसमानी किताबों का इल्म रखते थे, उन से पूछ लो कि पहले नबियों में जो गुज़र चुके हैं वह इंसान थे या दूसरे? वे तुम्हें बतायेंगे कि सभी इंसान थे। इस से कुछ लोग "अनुकरण (तक़लीद)" का सुबूत पेश करते हैं जो जायज़ नहीं। "तक़लीद" में क्या होता है? केवल एक ख़ास इंसान और उस से सम्बन्धित (मुताल्लिक़) एक निर्धारित (मुतअय्यिन) फ़िक्र को बुनियाद बनाया जाये और उसी के अनुसार काम किया जाये। दूसरा यह कि बिना किसी सुबूत के उसकी बात को क़ुबूल कर लिया जाये। जबकि आयत में "अहले ज़िक्र" से मतलब कोई ख़ास इंसान नहीं है बल्कि हर आलिम है जो तौरात और इंजील (बाईबिल) का इल्म रखता था। इस से व्यक्तिगत (शख़्सी) अनुकरण का खन्डन (तरदीद) होता है? इस में तो आलिमों से पूछने को कहा गया है जो आम लोगों के लिए ज़रूरी है, जिस से किसी को इंकार नहीं हो सकता न किसी एक इंसान के दामन को पकड़ लेने का हुक्म। इस के सिवाय तौरात और इंजील आसमानी किताबें थीं या किसी इंसान के अपने ख़्याल? अगर तौरात और इंजील आसमानी किताबें थीं तो मतलब यह हुआ कि आलिमों के ज़रिये आसमानी किताबों के नियम मालूम करें जो आयत का उचित (मुनासिब) मायेना है, और अगर वह किसी एक ख़ास इंसान, गुरू, और उस के शिष्यों के उपदेश (अक़वाल) की संग्रह (मजमूआ) थी तो फिर ज़रूर फ़िक़्ही (वैचारिक) तक़लीद (अनुकरणवाद) का मतलब इस आयत से निकल आता है, लेकिन क्या आसमानी किताबें और इंसानों के ज़रिये लिखी गई फ़िक़्ही किताबें दोनों एक ही जगह रखे जाने के लायक़ हैं?

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ ﴿9﴾

९. फिर हम ने उन से किये हुए सभी वादे सच कर दिखाये, उन्हें और जिन-जिन को हम ने चाहा नजात दी और हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया।

لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿10﴾

१०. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी है, जिस में तुम्हारे लिए शिक्षा (नसीहत) है। क्या फिर भी तुम अक़्ल का इस्तेमाल नहीं करते?

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿11﴾

११. और बहुत सी बस्तियां हम ने हलाक कर दीं जो जालिम थीं, और उन के बाद हम ने दूसरी क़ौम पैदा किया।

فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ﴿12﴾

१२. जब उन लोगों ने हमारे अज़ाब का एहसास कर लिया तो उस से (प्रकोप से) भागने लगे।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿13﴾

१३. भाग-दौड़ न करो और जहां तुम्हें सुख अता किया गया था, वहीं वापस लौटो और अपने घरों की ओर जाओ ताकि तुम से सवाल तो कर लिया जाये।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿14﴾

१४. वे कहने लगे हमारा बुरा हो बेशक हम जालिम थे।

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ ﴿15﴾

१५. फिर तो उनका यही क़ौल रहा, यहां तक कि हम ने उन्हें जड़ से कटी हुई खेती और बुझी पड़ी आग (की तरह) कर दिया।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿16﴾

१६. हम ने आकाश और धरती और उन के बीच की चीज़ों को खेल के लिए नहीं बनाया।

[1] حَصِيْد कटी हुई खेती और خُمُود आग के बुझ जाने को कहते हैं, आख़िर वे कटी हुई खेती की तरह हो गये और बुझी हुई आग की तरह राख का ढेर हो गये, कोई ताक़त, ज़ोर और संवेदन उन के अन्दर न रही।

१७. अगर हम इसी तरह तमाशा खेल चाहते तो उसे अपने पास से ही बना लेते, अगर हम ऐसा करने वाले ही होते।

لَوْ أَرَدْنَآ أَن نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِن لَّدُنَّآ ۖ إِن كُنَّا فٰعِلِينَ ﴿17﴾

१८. बल्कि हम सच को झूठ पर फेंक मारते हैं, तो सच, झूठ का सिर तोड़ देता है और वह उसी समय नाबूद हो जाता है, तुम जो बातें बनाते हो वे तुम्हारे लिए ख़राबी का सबब हैं।

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۚ وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ﴿18﴾

१९. और आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी (अल्लाह) का है, और जो उसके पास हैं[1] वे उसकी इबादत से न सरकशी करते और न थकते हैं।

وَلَهُ مَن فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِندَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ﴿19﴾

२०. वे दिन-रात उसकी पाकीज़गी का बयान करते हैं, और ज़रा भी सुस्ती नहीं करते।

يُسَبِّحُونَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ﴿20﴾

२१. उन लोगों ने धरती (की तख़्लीक़ में) से जिन्हें माबूद बना रखा है, क्या वह ज़िन्दा कर देते हैं?

أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ ﴿21﴾

२२. अगर आकाश और धरती में अल्लाह के सिवाय दूसरे भी माबूद होते तो यह दोनों उलट-पलट हो जाते।[2] बस अल्लाह अर्श का रब हर उस गुण (सिफ़्त) से पाक है, जो ये मूर्तिपूजक बयान करते हैं।

لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿22﴾

---

[1] इस से मुराद फ़रिश्ते हैं, वे भी अल्लाह के दास और बंदे हैं। इन शब्दों से उनकी इज़्ज़त और एहतेराम ज़ाहिर होती है कि वे अल्लाह के क़रीब हैं। उसकी (अल्लाह की) पुत्रियाँ नहीं हैं, जैसाकि मुश्रिक लोगों का अक़ीदा (विश्वास) था।

[2] यानी अगर हक़ीक़त में आकाश और धरती के दो ईश्वर होते तो इस दुनिया की हक़दार दो ताक़तें होतीं। दो का इरादा, अक़्ल और मर्ज़ी काम करती और जब दो की मर्ज़ी और फ़ैसला दुनिया में चलता तो यह दुनिया की व्यवस्था (तदबीर) रह ही नहीं सकती थी जो शुरू से बिना रुकावट के चली आ रही है। क्योंकि दोनों की मर्ज़ी में आपसी टकराव होता और दोनों की चाहत एक-दूसरे के विपरीत (मुख़ालिफ़) दिशा में इस्तेमाल होती, जिसका नतीजा बिखराव और बरबादी के रूप में पैदा होता, और अब तक ऐसा नहीं हुआ तो इसका साफ़ मतलब यह है कि दुनिया में केवल एक ही ताक़त है, जिसकी मर्ज़ी और हुक्म चलता है, जो कुछ भी होता है सिर्फ़ उसी के हुक्म पर होता है। उस के दिये हुए को कोई रोक नहीं सकता और जिस से वह अपनी दया रोक ले उसको देने वाला कोई नहीं।

२३. वह अपने कामों के लिए (किसी के सामने) उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं और सभी (उस के सामने) उत्तरदायी हैं।

لَا يُسْـَٔلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔلُوْنَ ﴿23﴾

२४. क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय दूसरे माबूद बना रखे हैं, उन से कह दो लाओ अपना सुबूत पेश करो, यह है मेरे साथ वालों की किताब और मुझ से पहले वालों का सुबूत। बात यह है कि उन में ज़्यादातर हक़ से अंजान हैं, इसी वजह से मुँह मोड़ें हैं।

اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿24﴾

२५. और हम ने तुम से पहले जो रसूल (संदेशवाहक) भी भेजा, उसकी तरफ यही वह्यी (ईशवाणी) नाज़िल (अवतरित) की कि मेरे सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, तो तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿25﴾

२६. और (मुश्रिक) कहते हैं रहमान (कृपालु) की औलादें हैं (गलत है) वह पाक है। बरना वे (जिन्हें ये पुत्र समझ रहे हैं) उसके बाइज़्ज़त बंदे हैं।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ﴿26﴾

२७. उस के (अल्लाह के) सामने बढ़कर नहीं बोलते, और उस के हुक्म पर अमल करते हैं।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿27﴾

२८. वह उन के पहले और बाद की सभी हालतों से अवगत (वाक़िफ़) है, और वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उस के जिस से वह (अल्लाह) ख़ुश हो[1] वे तो ख़ुद काँपते और डरते रहते हैं।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿28﴾

[1] इस से मालूम हुआ कि नबियों और स्वालेह लोगों (पुनीत लोग) के सिवाय फ़रिश्ते भी सिफ़ारिश करेंगे, सही हदीस से भी इसका समर्थन (ताईद) मिलता है, लेकिन यह सिफ़ारिशें उन्हीं के लिए होंगी जिन के लिए अल्लाह तआला चाहेगा। और ज़ाहिर बात है कि अल्लाह तआला यह सिफ़ारिश अपने नाफ़रमान बंदों के लिए नहीं बल्कि केवल पापी, लेकिन फ़रमाँबरदार लोगों यानी ईमान वालों व एकेश्वरवादियों के लिए पसन्द फ़रमायेगा।

وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِ فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿29﴾

२९. और उन में से कोई कह दे कि अल्लाह के सिवाय मैं इलाह (पूजनीय) हूँ, तो हम उसे नरक की सजा दें, हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं।

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿30﴾

३०. क्या काफ़िरों ने यह नहीं देखा[1] कि (ये) आकाश और धरती (सब के सब) आपस में मिले हुए थे, फिर हम ने उन्हें अलग-अलग किया, और हर जानदार को हम ने पानी से पैदा किया।[2] क्या यह लोग फिर भी यकीन नहीं करते ?

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿31﴾

३१. और हम ने धरती पर पहाड़ बना दिये, ताकि वह मख़लूक़ को हिला न सके, और हम ने इस में उन के बीच चौड़े रास्ते बना दिये ताकि वह रास्ता हासिल कर सकें।

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿32﴾

३२. और आकाश को हम ने एक महफ़ूज (सुरक्षित) छत बनाया है, लेकिन वह लोग उसकी निशानियों पर ध्यान नहीं देते।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿33﴾

३३. और वही (अल्लाह) है जिस ने रात-दिन और सूरज-चाँद को बनाया।[3] उन में से सभी अपने-अपने मदार (कक्षा) में तैर रहे हैं।[4]

---

[1] इसका मतलब आँख से देखना नहीं बल्कि दिल की आँखों से देखना है, यानी क्या उन्होंने सोच-विचार नहीं किया या उन्होंने जाना नहीं?

[2] इसका मतलब वर्षा और चश्मों (स्रोतों) के पानी है, तब भी वाजेह रहे कि इससे तरावट होती है और हर जानदार को नई जिन्दगी देता है और अगर इसका मतलब मनी है तो इस में भी कोई कठिनाई नहीं, क्योंकि हर जानदार के अस्तित्व (वजूद) का सबब वह पानी की बूँदें है, जो मर्द की पीठ से निकलता है और स्त्री के गर्भाशय (रिहम) में जाकर एक नये प्राणी (मख़लूक़) को जन्म देने का सबब बनता है।

[3] यानी रात को आराम और दिन को काम के लिए बनाया, सूरज को दिन की निशानी और चाँद को रात की निशानी बनाया, ताकि महीनों और सालों का हिसाब लगाया जा सके, जो इंसान के लिए ख़ास जरूरत है।

[4] जिस तरह से तैरने वाला पानी के ऊपर तैरता है, उसी तरह से चाँद और सूरज अपने मदार (कक्षा) में अपनी मुक़र्रर रफ़्तार से चलते हैं।

३४. और आप से पहले हम ने किसी भी व्यक्ति को हमेशगी नहीं दी, फिर क्या अगर आप मर गये तो यह सदा के लिए रह जायेंगे?[1]

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿34﴾

३५. हर नफ़्स (जीव) को मौत का मज़ा चखना है, और हम इम्तेहान के लिए तुम्हें बुराई-भलाई में डालते हैं[2] और तुम सब हमारी तरफ पलटकर आओगे।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿35﴾

३६. और जिन लोगों ने कुफ़्र (अविश्वास) किया वे जब तुम को देखते हैं तो बस तुम्हारी हँसी उड़ाते हैं, (कहते हैं) कि क्या यही वह है जो तुम्हारे देवताओं (पूज्यों) की चर्चा बुराई से करता है? और वह ख़ुद ही रहमान (कृपालु) का ज़िक्र (महिमा) करने से इंकार करते हैं।

وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿36﴾

३७. इंसान पैदाईशी उतावला है, मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ (लक्षण) जल्द ही दिखाऊँगा, तुम मुझ से जल्दी न करो।

خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿37﴾

३८. और कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो बताओ कि वह वादा (यातना) कब पूरा होगा।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿38﴾

---

[1] यह काफिरों के जवाब में है जो आप (ﷺ) के बारे में कहते थे कि एक दिन आप को मर ही जाना है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मौत तो हर इंसान को आनी ही है और इस के ऐतबार से बेशक मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी इस नियम से अलग नहीं, क्योंकि वह भी इंसान ही हैं, और हम ने किसी इंसान को हमेशा के लिए इस धरती पर जिन्दा रहने के लिए नहीं छोड़ दिया है। इसका मतलब यह तो नहीं कि क्या यह बात कहने वाले इस धरती पर जिन्दा रहेंगे? इस से मूर्तिपूजकों और क़ब्र पूजने वालों का भी खण्डन (तरदीद) हो गया, जो देवताओं, नबियों, बुज़ुर्गों के हमेशा जिन्दा रहने का भ्रम रखते हैं, इसी बिना पर उनको अपना दुखहारी, मुश्किल कुशा समझते हैं, इस गलत ख़्याल से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

[2] यानी कभी दुख-दर्द में घेरकर, कभी दुनियावी आसानी से, कभी सेहत और ख़ुशहाली से, कभी तंगी और बीमारी से, कभी धन-दौलत देकर और कभी भूख-प्यास देकर हम इम्तेहान (परीक्षा) लेते हैं कि हम देखें कि कौन फिर भी शुक्रगुज़ार है और कौन नाशुकरा (कृतघ्न)? कौन सब्र करता है और कौन सहन नहीं करता? शुक्र व सब्र (धन्य और धैर्य) अल्लाह को ख़ुश करने वाले हैं और नाशुक्री और नासब्री उस रब के अज़ाब की वजह है।

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿39﴾

३९. अगर ये काफिर जानते कि उस समय न तो ये आग को अपने चेहरों से हटा सकेंगे और न अपनी पीठों से, और न इन की मदद की जायेगी।

بَلْ تَأْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿40﴾

४०. हाँ, हाँ! वादा की घड़ी (क़यामत का दिन) उन के पास अचानक आ जायेगी और उन्हें वह हक्का बक्का कर देगी, फिर न तो यह लोग उसे टाल सकेंगे और न ही उन्हें तनिक भी समय दिया जायेगा।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿41﴾

४१. और तुम से पहले रसूलों का भी मज़ाक़ किया गया तो जिन्होंने मज़ाक़ किया, उन्हें ही उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वे मज़ाक़ करते थे।

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ۭ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿42﴾

४२. उनसे पूछिये कि रहमान (कृपालु) से रात और दिन तुम्हारी रक्षा (हिफ़ाज़त) कौन कर सकता है? बल्कि यह अपने रब के ज़िक्र (महिमा) करने से फिरे हुए हैं।

اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ۭ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ﴿43﴾

४३. क्या हमारे सिवाय उनके कोई और इलाह (पूजनीय) हैं जो उन्हें मुसीबत से बचाते हों? कोई भी ख़ुद अपनी मदद करने की ताक़त नहीं रखता, और न कोई हमारी तरफ़ से साथ दिया जाता है।

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَاۗءِ وَاٰبَاۗءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۭ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا نَاْتِي الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ۭ اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿44﴾

४४. बल्कि हम ने इन्हें और इनके बुज़ुर्गों को ज़िन्दगी की सामग्री (आसाईश) दी, यहाँ तक कि उनकी उम्र की सीमा ख़त्म हो गयी, क्या वह नहीं देखते कि हम ज़मीन को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं? तो अब क्या वही ग़ालिब हैं?

قُلْ اِنَّمَآ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ڮ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاۗءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ﴿45﴾

४५. कह दो कि मैं तो केवल तुम्हें अल्लाह की वह्यी के ज़रिये बाख़बर करता हूँ, लेकिन बहरे इंसान पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हे सचेत

किया जा रहा हो।

وَلَئِن مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ يَٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظَٰلِمِينَ ﴿46﴾

४६. और अगर उन्हें तेरे रब के अज़ाब की भाप भी लग जाये तो पुकार उठें कि हाय हमारी बरबादी! बेशक हम ज़ालिम थे।

وَنَضَعُ الْمَوَٰزِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ۖ وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ۗ وَكَفَىٰ بِنَا حَٰسِبِينَ ﴿47﴾

४७. और हम क़यामत के दिन उन के बीच ठीक-ठीक तौल की तराज़ू ला रखेंगे, फिर किसी पर किसी तरह का ज़ुल्म न किया जायेगा, और अगर एक सरसों के दाने के बराबर भी (अमल) होगा उसे हम सामने लायेंगे, और हम हिसाब करने के लिए काफी हैं।[1]

وَلَقَدْ ءَاتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿48﴾

४८. और यह पूरी तरह से सच है कि हम ने मूसा और हारून को फ़ैसला करने वाली रौशन और नेक लोगों के लिए नसीहत वाली किताब अता की है।

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُم مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿49﴾

४९. वह लोग जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और जो क़यामत के (विचार) से कांपते रहते हैं।

وَهَٰذَا ذِكْرٌ مُّبَارَكٌ أَنزَلْنَٰهُ ۚ أَفَأَنتُمْ لَهُۥ مُنكِرُونَ ﴿50﴾

५०. और यह नसीहत व बरकत वाला क़ुरआन हम ने ही उतारा है, फिर भी तुम क्या इस से इंकार करते हो?

[1] میزان - موازین (तराज़ू) का बहुवचन (जमा) है। अमलों को तौलने के लिए क़यामत के दिन या तो कई तराज़ू होंगी या तराज़ू एक ही होगी, लेकिन उसकी ख़ास अज़मत के लिए या अमल की तादाद के हिसाब से इसे बहुवचन के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। इंसान के अमल तो भौतिक (जिस्मानी) नहीं यानी इनकी खुले तौर से कोई शक्ल तो नहीं है, फिर उसको तौला किस तरह से जायेगा? यह सवाल आज से पहले तक तो शायद कोई अहमियत (विशेषता) रखता था, लेकिन आज के साइंसी अविष्कार (ईजाद) ने इसे मुमकिन बना दिया है। अब इन अविष्कारों के ज़रिये बिना शक्ल और बिना वज़न की चीज़ों को भी नापा तौला जाने लगा है। जब इंसान यह क़ुदरत रखता है तो अल्लाह तआला के लिए उन अमलों को जो बिना शक्ल हैं, तौलना कौन सा कठिन काम है, उसकी तो शान ही निराली है।

५१. और बेशक हम ने इस से पहले इब्राहीम को समझ बूझ अता किया था,[1] और उसकी हालत से अच्छी तरह परिचित (वाक़िफ़) थे।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ ﴿51﴾

५२. जब उस ने अपने पिता और अपनी जाति वालों से कहा कि यह मूर्तियाँ, जिन के तुम पुजारी बने बैठे हो, ये क्या हैं ?

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ ﴿52﴾

५३. उन्होंने कहा, हम ने अपने बाप-दादा को इनकी इबादत (पूजा) करते पाया है।[2]

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ ﴿53﴾

५४. आप ने कहा फिर तो तुम और तुम्हारे बाप-दादा खुली गुमराही में थे।

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿54﴾

५५. उन्होंने कहा कि क्या आप हक़ीक़त में हक़ लाये हैं या यूँ ही मज़ाक़ कर रहे हैं।

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ ﴿55﴾

५६. आप ने कहा (नहीं) बल्कि हक़ीक़त में तुम्हारा रब आकाशों और धरती का रब है, जिस ने उन्हे पैदा किया है और मैं तो इसी बात का गवाह (और मानता) हूँ।

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿56﴾

५७. और अल्लाह की क़सम मैं तुम्हारी मूर्तियों का इलाज ज़रूर करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चल दोगे।

وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿57﴾

[1] من قبل का मतलब या तो यह है कि हज़रत इब्राहीम को इल्म (नसीहत और अक़्ल) देने का क़िस्सा हज़रत मूसा को तौरात देने से पहले का है, या यह मतलब है कि हज़रत इब्राहीम को नबी होने से पहले ही इल्म अता कर दिया गया था।

[2] जिस तरह आज भी जिहालत और ग़लत अक़ीदे में फँसे हुए मुसलमानों को बिदअत (इस्लाम धर्म में नई बात पैदा करना, जिसका इस्लाम धर्म (दीन) के नियमों से कोई मतलब या सुबूत न मिलता हो) और बेकार की रस्मों से रोका जाता है तो जवाब देते हैं कि हम इन्हें किस तरह छोड़ दें, जबकि हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को भी यही करते देखा है, और यही जवाब वह लोग भी देते हैं जो किताब व सुन्नत के हुक्म को छोड़कर आलिमों और उनकी तरफ़ सम्बन्धित फ़िक़्ह (धर्मबोध) से सम्बन्धित (मन्सूब) रहने को ही ज़रूरी समझते हैं।

५८. तो उस ने उन सब के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, बस केवल बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया, यह भी इसलिए कि वह लोग उसकी तरफ़ पलटें ।[1]

فَجَعَلَهُمْ جُذَٰذًا إِلَّا كَبِيرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ﴿58﴾

५९. वे कहने लगे कि हमारे देवताओं की यह दुर्गत किस ने की, ऐसा इंसान जरूर जालिम होगा ।

قَالُوا مَن فَعَلَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿59﴾

६०. बोले कि हम ने एक नौजवान को इन के बारे में बात करते हुए सुना था, जिसे इब्राहीम कहा जाता है ।

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ﴿60﴾

६१. उन्होंने कहा, तो उसे सब की आँखों के सामने ले आओ ताकि सब देखें ।

قَالُوا فَأْتُوا بِهِ عَلَىٰ أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿61﴾

६२. कहने लगे हे इब्राहीम! क्या तूने ही हमारे देवताओं की यह दुर्गत बनाई है?

قَالُوا أَأَنتَ فَعَلْتَ هَٰذَا بِآلِهَتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ﴿62﴾

६३. आप ने जवाब दिया, बल्कि यह काम तो उन के बड़े देवता ने किया है, तुम अपने देवताओं से पूछ लो अगर वह बोलते हों ।

قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا فَاسْأَلُوهُمْ إِن كَانُوا يَنطِقُونَ ﴿63﴾

६४. अत: उन्होंने अपने मन में मान लिया और (मन ही में) कहने लगे कि हकीकत में तुम ख़ुद जालिम हो ।

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنتُمُ الظَّالِمُونَ ﴿64﴾

६५. फिर औंधे सिर डालकर (कुछ सोच-समझ कर, अगरचे वे क़ुबूल कर चुके थे फिर भी वे बोले) कि यह तुम जानते हो कि यह नहीं बोलते ।

ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هَٰؤُلَاءِ يَنطِقُونَ ﴿65﴾

---

[1] तो जिस दिन अपनी ईद या कोई त्योहार मनाने के लिए सारी जाति के लोग बाहर चले गये तो हजरत इब्राहीम ने अच्छा समय जानकर मूर्तियों को तोड़-फोड़ डाला, केवल एक बड़ी मूर्ति रहने दी, कुछ आलिम कहते हैं कि उन्होंने कुल्हाड़ी उस बड़ी मूर्ति के हाथ में फंसा दी, ताकि उस मूर्ति से पूछें ।

قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ (66)

६६. (इब्राहीम ने) उसी समय कहा, हाय! क्या तुम उनकी इबादत करते हो जो न तुम्हें कुछ भी फ़ायेदा पहुँचा सकते हैं और न नुक़सान।

اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (67)

६७. थू है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के सिवाय इबादत करते हो, क्या तुम्हें इतनी भी अक़्ल नहीं ?

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ (68)

६८. उन्होंने कहा कि इसे जला दो और अपने देवताओं की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है तो।[1]

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓي اِبْرٰهِيْمَ (69)

६९. हम ने कहा, हे आग! तू ठंडी हो जा और इब्राहीम के लिए सलामती [(शान्ति) और सुखदायी] बन जा।

وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ (70)

७०. अगरचे उन्होंने उस (इब्राहीम) का बुरा चाहा, लेकिन हम ने उन्हें ही नाकाम (असफल) कर दिया।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ (71)

७१. और हम (इब्राहीम) और लूत को बचाकर उस जमीन की तरफ़ ले गये, जिस में हम ने सारी दुनिया के लिये बरकतें रखी थीं।[2]

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۭ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ (72)

७२. और हम ने उसे इसहाक़ अता किया, और उस पर ज़्यादा याक़ूब, और हर एक को नेक बनाया।[3]

---

[1] हज़रत इब्राहीम ने जब अपनी दलील पेश कर दिया और उनकी गुमराही (विपथा) और बेवकूफ़ी को इस तरह से ज़ाहिर किया कि उन के पास कोई जवाब न रहा, तो चूँकि वे गुमराह थे और कुफ्र और शिर्क ने उन के दिल में अँधेरा कर दिया था, इसलिए बजाय शिर्क छोड़ने के उलटे हज़रत इब्राहीम की मुख़ालफ़त में और कड़े हो गये और अपने देवताओं की दुहाई देकर उनको आग में डालने की तैयारी करने लगे।

[2] इस से मुराद बहुत से मुफ़स्सिरों ने सीरिया देश लिया है, जिसको हरियाली, फलों और नहरों की ज़्यादती और नबियों की रिहाईश होने के सबब बरकत (मंगलमय) कहा गया है।

[3] نَافِلَةً ज़्यादा को कहते हैं। हज़रत इब्राहीम ने तो केवल बेटे की तमन्ना की थी, उनकी तमन्ना के अलावा पौता भी प्रदान (अता) किया।

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ﴿73﴾

७३. और हम ने उन्हें इमाम बना दिया कि हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करें और हम ने उनकी तरफ नेक अमल करने और नमाज़ कायम करने और ज़कात देने की वह्यी (प्रकाशना) की और वे सब के सब हमारे पुजारी थे।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓىِٕثَ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ﴿74﴾

७४. और हम ने लूत को भी हिक्मत और इल्म अता किया, और उसे उस बस्ती से नजात दिया जहाँ के लोग गन्दे कामों में लिप्त (मुब्तिला) थे और हक़ीक़त में वे बुरे गुनहगार लोग थे।

وَاَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ۭ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿75﴾

७५. और हम ने उसको (लूत को) अपनी रहमत (कृपा) में शामिल कर लिया, बेशक वह नेक लोगों में से था।[1]

وَنُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿76﴾

७६. और नूह के उस समय को (याद करो) जब उस ने इस से पहले दुआ (विनय) की हम ने उस की दुआ (विनय) क़बूल की, और हम ने उस को और उस के परिवार को बड़े दुख से आज़ाद कर दिया।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿77﴾

७७. और उस क़ौम के मुक़ाबले में उसकी मदद की जिस ने हमारी आयतों को झुठलाया था, हक़ीक़त में वे बुरे लोग थे तो हम ने उन सब को डुबो दिया।

[1] हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भाई के पुत्र (भतीजे) थे, और हज़रत इब्राहीम पर ईमान लाये थे और उन के साथ ईराक से यात्रा करके सीरिया जाने वालों में से थे, अल्लाह ने उनको भी इल्म व हिक्मत यानी नबूअत अता की थी, वह जिस इलाके के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे, उसे अमूरः और सदूम कहा जाता है। यह फ़िलिस्तीन के मुर्दा सागर से लगा हुआ जार्डन की ओर उपजाऊ इलाका था, जिसका बड़ा हिस्सा अब मृत सागर का एक हिस्सा है, उनकी जाति वाले गुदा मैथुन (लिवातत) जैसे बुरे कामों, रास्तों पर बैठकर राहियों पर आवाजें कसने और उन्हें तंग करने, कंकरिया मारने में मशहूर थे, जिसे अल्लाह तआला ने ख़बाएस (कुकर्म) कहा है। आख़िर में हज़रत लूत और उसके पैरोकारों को अपनी रहमत में दाख़िल करके यानी उन को बचाकर क़ौम का सत्यानाश कर दिया।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَٰنَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ الْقَوْمِ وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَٰهِدِينَ (78)

७८. और दाऊद और सुलैमान को (याद कीजिए) जबकि वे खेत के बारे में फैसला (निर्णय) कर रहे थे कि कुछ लोगों की बकरियाँ रात को उस में चर गयी थीं और उन के फैसले में हम मौजूद थे।

فَفَهَّمْنَٰهَا سُلَيْمَٰنَ ۚ وَكُلًّا ءَاتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۚ وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ۚ وَكُنَّا فَٰعِلِينَ (79)

७९. तो हम ने उसका सहीह फैसला सुलैमान को समझा दिया,[1] बेशक हम ने हर एक को हिक्मत और इल्म दे रखा था, और दाऊद के अधीन (ताबे) हम ने पहाड़ कर दिये थे जो तस्बीह (महिमा) करते थे[2] और पक्षियों को भी,[3] ऐसा हम करने वाले ही थे।

وَعَلَّمْنَٰهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُم مِّنۢ بَأْسِكُمْ ۖ فَهَلْ أَنتُمْ شَٰكِرُونَ (80)

८०. और हम ने उसे तुम्हारे लिये कपड़ा (कवच) बनाना सिखाया, ताकि लड़ाई (के नुकसान) से तुम्हारा बचाव कर सके,[4] फिर क्या तुम अब

---

[1] टीकाकारों (मुफ़स्सिरों) ने यह कहानी इस तरह बयान किया है कि एक आदमी की बकरियाँ रात को दूसरे आदमी के खेत में चली गयीं और खेत को चर गयीं। हज़रत दाऊद जो पैग़म्बर (ईशदूत) के साथ-साथ हाकिम भी थे, उन्होंने फैसला दिया कि बकरियाँ खेत वाला ले ले ताकि उसका नुकसान पूरा हो सके। हज़रत सुलैमान ने इस इंसाफ का विरोध किया और फैसला किया कि कुछ समय के लिए बकरियाँ खेत के मालिक को दे दी जायें ताकि वह इनका फ़ायेदा उठाए, और खेती बकरी वाले को दे दी जाये ताकि वह खेतों की सिंचाई और देखभाल करके उसे सुधारे, जब वह खेत उस हालत में आ जाये जैसा बकरियों के चरने से पहले था, तो खेत, खेत के मालिक को और बकरियाँ, बकरियों के मालिक को वापस कर दी जायें। पहले इंसाफ के मुक़ाबिले में दूसरा फैसला इस ऐतबार से उचित (मुनासिब) था कि किसी को अपनी चीज़ से हाथ नहीं धोना पड़ा, जबकि पहले फैसले में बकरी वाले को बकरियों से हाथ धोना पड़ा था, फिर भी अल्लाह ने हज़रत दाऊद की तारीफ़ की कि हम ने हर एक को (यानी दाऊद और सुलैमान को) इल्म और हिक्मत अता किया था।

[2] इसका मतलब यह कभी नहीं कि पहाड़ उनकी तस्बीह (प्रशंसागान) की आवाज़ से गूँज उठते थे (क्योंकि इस में कोई चमत्कार की बात ही बाक़ी नहीं होती) हर एक छोटी-बड़ी रूह की ऊँची आवाज़ से गूँज पैदा हो सकती है (आवाज़ लौटने की शक्ल में)। बल्कि मतलब हज़रत दाऊद के साथ पहाड़ों का भी तस्बीह पढ़ना है, यह कहने की बात नहीं थी हक़ीक़त में थी।

[3] पक्षी भी दाऊद की दर्द भरी आवाज़ को सुनकर अल्लाह की पाकी का बयान करते थे या पक्षी भी उन के अधीन (ताबे) कर दिये गये थे।

[4] यानी हम ने दाऊद के लिए लोहे को नरम बना दिया था जिस से वह लड़ाई के लिये कपड़ा

शुक्रगुज़ारी करोगे?

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَكُنَّا بِكُلِّ شَىْءٍ عٰلِمِيْنَ ﴿81﴾

८१. और हम ने सुलैमान के अधीन (तावे) तेज़ तुन्द हवा कर दी जो उस के हुक्म पर उस धरती की तरफ़ चलती थी, जिस में हम ने बरकतें रखी थीं, और हम हर चीज़ को जानते हैं।

وَمِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَيَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَكُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ﴿82﴾

८२. और (इसी तरह) बहुत से शैतानों को भी (उसका अधीनस्थ बनाया था) जो उस के हुक्म पर डुबकी लगाते थे और इस के सिवाय बहुत से काम करते थे, और उनकी हिफ़ाज़त करने वाले हम ही थे।

وَاَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿83﴾

८३. और अय्यूब (की उस हालत को याद करो) जबकि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे यह रोग लग गया है, और तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّاٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى لِلْعٰبِدِيْنَ ﴿84﴾

८४. तो हम ने उस की (गुहार) सुन ली और जो दुख उन्हें था उसे दूर कर दिया और उसे उस का परिवार अता किया, बल्कि उसे अपनी ख़ास रहमत से[1] उन के साथ वैसे ही और दिये ताकि इबादत करने वालों के लिए नसीहत का सबब (स्मरणीय) हो।

और कवचें बनाते थे जो लड़ाई के मैदान में तुम्हारी सुरक्षा (हिफ़ाज़त) का सामान हैं। नबी के साथी क़तादह का कहना है कि नबी दाऊद से पहले भी कवचें बनती थीं मगर वह सादी थीं उन में कड़ियाँ नही होती थीं, नबी दाऊद पहले इंसान हैं जिन्होंने कड़ियों और कुन्डे वाली कवचें तैयार की। (इब्ने कसीर)

[1] क़ुरआन मजीद में हज़रत अय्यूब को साबिर (धैर्यवान) कहा गया है। (सूर: साद) इसका मतलब यह है कि उनका इम्तेहान लिया गया, जिस में उन्होंने कृतज्ञता और धैर्य (सब्र और शुक्र) का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। वे इम्तेहान और कष्ट क्या थे, इसका कोई सहीह बयान नही मिलता। फिर भी क़ुरआन के बयान के ऐतबार से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें धन-धान्य और पुत्र दे रखे थे, इम्तेहान के लिए अल्लाह तआला ने यह सभी छीन लिये थे, यहाँ तक कि जिस्मानी ताक़त भी कमज़ोर कर दी थी, इसलिए रोगों से पीड़ित थे। आख़िर में कहा जाता है कि १८ साल के इम्तेहान के बाद अल्लाह के सामने दुआ की, अल्लाह ने दुआ क़ुबूल की और सेहत (स्वास्थ्य) के साथ-साथ धन-धान्य और पुत्र पहले से दोगुने दिये। इसका कुछ बयान सहीह इब्ने हिब्बान के एक बयान में मिलता है।

وَإِسْمٰعِيلَ وَإِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِينَ ﴿85﴾

८५. और इस्माईल और इदरीस, और जुलकिफ्ल[1] ये सब सब्र करने वाले थे।

وَأَدْخَلْنٰهُمْ فِي رَحْمَتِنَا ۖ إِنَّهُم مِّنَ الصّٰلِحِينَ ﴿86﴾

८६. हम ने उन्हें अपनी रहमत (दया) में दाख़िल कर दिया, ये सब नेक लोग थे।

وَذَا النُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي الظُّلُمٰتِ أَن لَّا إِلٰهَ إِلَّا أَنتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنتُ مِنَ الظّٰلِمِينَ ﴿87﴾

८७. और मछली वाले[2] (यूनुस عليه السلام) को (याद करो)! जबकि वह नाराज (क्रोधित) होकर चल दिया और समझता था कि हम उसे न पकड़ेंगे। आख़िर में उस ने अंधेरों [3] में से पुकारा कि इलाही (पूजनीय) तेरे सिवाय कोई माबूद (पूज्य) नहीं है, तू पाक है। बेशक मैं ही जालिमों में से हूं।

فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ۚ وَكَذٰلِكَ نُنجِي الْمُؤْمِنِينَ ﴿88﴾

८८. तो हम ने उस की पुकार सुन ली और उसे दुखों से आज़ाद किया, और हम इसी तरह ईमान वालों को बचा लिया करते हैं।

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادٰى رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنتَ خَيْرُ الْوٰرِثِينَ ﴿89﴾

८९. और ज़करिया को (याद करो) जब उस ने अपने रब से दुआ की कि हे मेरे रब ! मुझे अकेला न छोड़, तू सब से अच्छा वारिस है।

---

[1] जुलकिफ्ल के बारे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है कि वह नबी थे या नहीं? कुछ उनकी नबूअत और कुछ विलायत के हक़ में हैं। इमाम इब्ने जरीर इन के बारे में ख़ामोश हैं, इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं: "क़ुरआन में नबियों के साथ उनका भी बयान उन के नबी होने को ज़ाहिर करता है।" अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

[2] मछली वाले से मुराद हज़रत यूनुस हैं जो अपनी क़ौम से नाराज होकर अल्लाह के अज़ाब की धमकी देकर, अल्लाह के हुक्म के बिना ही वहाँ से चल दिये थे, जिस पर अल्लाह तआला ने पकड़ा और उन्हें मछली का भोजन (कौर) बना दिया, इसका कुछ बयान सूर: यूनुस में हो चुका है और कुछ सूर: साफ़्फ़ात में आयेगा।

[3] ظُلُمات, ظُلْمَةٌ का बहुवचन (जमा) है, जिसका मतलब अंधेरा होता है। हज़रत यूनुस अंधेरों मे घिरे हुए थे, रात का अंधेरा, समुद्र का अंधेरा और मछली के पेट का अंधेरा।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۡ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسٰرِعُوْنَ فِى الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ﴿90﴾

९०. तो हम ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उसे यहया अता किया, और उनकी पत्नी को उनके लिए सुधार दिया।[1] यह नेक लोग नेक अमल की तरफ़ जल्दी दौड़ते थे, और हमें रग़बत और डर के साथ पुकारते थे, और हमारे सामने विनम्र (आजिज़ी से) रहते थे।

وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿91﴾

९१. और वह (पाकबाज़ औरत) जिस ने अपनी इस्मत (सतीत्व) की हिफ़ाज़त की, हम ने उस के अन्दर अपनी रूह (आत्मा) फूंकी और ख़ुद उसको और उस के पुत्र को सारी दुनिया के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया।

اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ﴿92﴾

९२. यह तुम्हारा गिरोह है जो हक़ीक़त में एक ही गिरोह है, और मैं तुम सब का रब हूं। इसलिए तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।[2]

وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ﴿93﴾

९३. लेकिन लोगों ने आपस में अपने दीन में गुट बना लिये, सब को हमारी तरफ़ पलटकर आना है।[3]

---

[1] यानी वह बांझ और किसी बच्चे के जन्म देने लायक नहीं थी, हम ने उसके इस कमी को दूर करके उसे एक नेक बेटा अता किया।

[2] उम्मः (गिरोह) का मतलब यहां धर्म या मज़हबी जमाअत है, यानी तुम्हारा धर्म और गिरोह एक ही है और वह धर्म तौहीद का धर्म है, जिसकी दावत सभी नबियों ने दिया, और गिरोह इस्लाम का गिरोह है जो सभी नबियों का गिरोह रहा है। जिस तरह नबी ﷺ ने फ़रमाया : "हम नबियों की जमाअत अल्लाती औलाद (जिन का पिता एक और मातायें कई हों) हैं, हमारा धर्म एक ही है।" (इब्ने कसीर)

[3] यानी तौहीद (अद्वैत) और अल्लाह की इबादत (उपासना) छोड़कर कई जमाअतों और गिरोहों में बट गये। एक गिरोह मुशरिकों (मूर्तिपूजक वग़ैरह) और काफ़िरों का हो गया, और नबियों और रसूलों को मानने वाले भी पीढ़ियां बन गये, कोई यहूदी हो गया, कोई इसाई, और कोई कुछ। बदनसीबी से मुसलमानों में ख़ुद भी गिरोह बन्दी पैदा हो गयी, और यह भी बिसियों गिरोह में बट गये। इन सब का इंसाफ़ जब ये अल्लाह के सामने पेश होंगे तब वहीं होगा।

९४. फिर जो भी नेक काम करे, और वह मोमिन (एकेश्वरवादी) भी हो, तो उसकी कोशिश की कोई बेक़दरी (उपेक्षा) नहीं होगी। हम तो उस के लिखने वाले हैं।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ﴿94﴾

९५. और जिस बस्ती को हम ने हलाक कर दिया, उस के लिए फ़र्ज़ है कि वहाँ के लोग पलटकर नहीं आयेंगे।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿95﴾

९६. यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वे हर एक ढलवान से दौड़ते आयेंगे।[1]

حَتّٰٓى اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿96﴾

९७. और सच्चा वादा क़रीब आ लगेगा उस समय काफ़िरों की आँखें फटी की फटी रह जायेंगी कि हाय अफ़सोस! हम इस हाल से गाफ़िल थे, बल्कि हक़ीक़त (वास्तव) में हम ज़ालिम थे।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿97﴾

९८. तुम और अल्लाह के सिवाय जिन-जिन की तुम इबादत (उपासना) करते हो, सब नरक के ईंधन बनोगे, तुम सब उस (नरक) में जाने वाले हो।

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۭ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿98﴾

९९. अगर वे (सच्चे) माबूद होते तो नरक में दाखिल नहीं होते, और सब के सब उसी में हमेशा रहने वाले हैं।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَاۗءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ۭ وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿99﴾

---

[1] याजूज और माजूज का ज़रूरी बयान सूर: कहफ़ के आख़िर में गुज़र चुका है, हज़रत ईसा की मौजूदगी में क़यामत के क़रीब वे ज़ाहिर होंगे और इतनी तेज़ी से यह हर ओर फैल जायेंगे कि हर ऊँची जगह से ये दौड़ते हुए मालूम होंगे, उन के फ़साद और बुरे कामों से ईमान वाले तंग आ जायेंगे। फिर हज़रत ईसा के शाप से यह बरबाद हो जायेंगे, उनकी लाशों की बदबू हर तरफ़ फैलेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला पक्षियों को भेजेगा जो उनकी लाशों को उठाकर समुद्र में फेकेंगे, फिर एक बहुत तेज़ वर्षा (बारिश) करेगा, जिस से सारी धरती साफ़ हो जायेगी। (यह पूरा वाक़ेआ सहीह हदीस में बयान है, तफ़सील के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

لَهُمْ فِيهَا زَفِيرٌ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿100﴾

१००. वे वहाँ चिल्ला रहे होंगे और वहाँ कुछ भी न सुन सकेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿101﴾

१०१. लेकिन जिन के लिए हमारी तरफ़ से पहले से ही नेकी मुक़र्रर है, वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे।[1]

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿102﴾

१०२. वे तो नरक की आहट तक न सुन सकेंगे और अपनी मनचाही चीज़ों के साथ हमेशा रहने वाले होंगे।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿103﴾

१०३. वह बड़ी घबराहट भी उन्हें उदासीन न कर सकेगी और फ़रिश्ते उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम को वादा दिया जाता रहा।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ۚ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ ۚ وَعْدًا عَلَيْنَا ۚ إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ﴿104﴾

१०४. जिस दिन हम आकाश को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह रोल के कागज़ (पंजिका) लपेट दिये जाते हैं, जैसे हम ने पहली बार पैदा किया था उसी तरह दोबारा करेंगे, यह हमारा मज़बूत वादा है और यह हम ज़रूर करके ही रहेंगे।

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿105﴾

१०५. और हम ज़बूर में आगाही और नसीहत के बाद यह लिख चुके हैं कि धरती के वारिस मेरे नेक बंदे ही होंगे।

إِنَّ فِي هَٰذَا لَبَلَاغًا لِقَوْمٍ عَابِدِينَ ﴿106﴾

१०६. इबादत करने वाले बंदों के लिए तो इस में एक बड़ी ख़बर है।

[1] कुछ लोगों के मन में यह शक पैदा हो सकता था या मूर्तिपूजकों की तरफ़ से पैदा कराया जा सकता था, जैसाकि हक़ीक़त में हो रहा है कि इबादत (उपासना) तो हज़रत ईसा, उज़ैर, फ़रिश्तों और बहुत से बुज़ुर्गों की की जाती है। तो क्या यह भी अपने पुजारियों के साथ नरक (जहन्नम) में डाले जायेंगे? इस आयत में उसका भी बयान कर दिया गया है कि यह लोग तो अल्लाह के नेक बन्दे थे जिनकी नेकी की वजह से अल्लाह की तरफ़ से नेकी यानी हमेशा सुख या जन्नत की ख़ुशख़बरी तय कर दी गयी है, यह नरक से दूर ही रखे जायेंगे।

وَمَآ أَرْسَلْنَٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿107﴾

१०७. और हम ने आप को पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर ही भेजा है।[1]

قُلْ إِنَّمَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ أَنَّمَآ إِلَٰهُكُمْ إِلَٰهٌ وَٰحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ ﴿108﴾

१०८. कह दीजिए कि मेरी तरफ़ तो बस वह्यी की जाती है कि तुम सब का अल्लाह एक ही है, तो क्या तुम भी उसको मानने वाले हो?

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ ءَاذَنتُكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۖ وَإِنْ أَدْرِىٓ أَقَرِيبٌ أَم بَعِيدٌ مَّا تُوعَدُونَ ﴿109﴾

१०९. फिर अगर वह मुँह मोड़ लें तो कह दीजिए कि मैंने तुम्हें समान रूप से आगाह कर दिया है, मुझे इल्म (ज्ञान) नहीं है कि जिसका वादा तुम से किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर है।

إِنَّهُۥ يَعْلَمُ ٱلْجَهْرَ مِنَ ٱلْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ﴿110﴾

११०. बेशक (अल्लाह तआला) तो तुम्हारी खुली बातों को जानता है तथा जिसे तुम छुपाते हो उसे भी जानता है।

وَإِنْ أَدْرِى لَعَلَّهُۥ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَٰعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿111﴾

१११. और मुझे इसका भी इल्म नहीं, मुमकिन है कि यह तुम्हारा इम्तेहान (परीक्षा) हो और एक मुक़र्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक का लाभ हो।

قَٰلَ رَبِّ ٱحْكُم بِٱلْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا ٱلرَّحْمَٰنُ ٱلْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿112﴾

११२. (नबी ने) ख़ुद कहा हे पालनहार! इंसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दे, और हमारा रब बहुत रहम करने वाला है, जिस से मदद माँगी जाती है उन बातों पर जो तुम बयान कर रहे हो।

---

[1] इसका मतलब यह है कि जो आप ﷺ की रिसालत पर ईमान ले आयेगा, उस ने मानों इस रहमत को क़ुबूल कर लिया और अल्लाह के इन एहसानों पर शुक्र अदा किया, वह नतीजतन दुनिया-आख़िरत के सुखों को हासिल करेगा, और चूँकि आप की रिसालत पूरी दुनिया के लिए है, इसलिए आप पूरी दुनिया के लिए रहमत बनकर यानी अपनी नसीहतों (शिक्षाओं) के ज़रिये दुनिया और आख़िरत के सुखों का भागी बनाने के लिए आये हैं।

सूरतुल हज्ज-२२

سُوْرَةُ الْحَجِّ

सूरतुल हज्ज* मदीने में उतरी और इसकी अठहत्तर आयतें और दस रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿1﴾

१. ऐ लोगो ! अपने रब से डरो, बेशक क़यामत का जलजला बहुत बड़ी चीज़ है।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿2﴾

२. जिस दिन तुम उसे देख लोगे, हर दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और सभी गर्भवतियों (हमल वालियों) के गर्भ (हमल) गिर जायेंगे, और तू देखेगा कि लोग मतवाले दिखायी देंगे, अगरचे वे हक़ीक़त में मतवाले नहीं होंगे, लेकिन अल्लाह का अज़ाब बड़ा सख़्त (कठोर) है।[1]

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ﴿3﴾

३. और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बातें बनाते हैं वह भी जहालत के साथ, और हर सरकश शैतान की पैरवी करते हैं।

كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿4﴾

४. जिस पर अल्लाह का फ़ैसला लिख दिया गया है कि जो कोई भी उस की दोस्ती करेगा वह उसे भटका देगा और उसे आग के अज़ाब (यातना) की तरफ़ ले जायेगा।

---

* इस के मक्का और मदीना में उतरने में इख़्तिलाफ़ है, सही बात यही है इसका कुछ हिस्सा मक्का में और कुछ हिस्सा मदीने में उतरा। यह क़ुर्तबी का क़ौल है। (फ़तहुल क़दीर) यह क़ुरआन करीम की एक ही सूर: है जिस में दो सज्दे हैं।

[1] ऊपर आयत में जिस जलजला (भूकम्प) का बयान है, उस के नतीजे दूसरी आयतों में बयान किये गये हैं, जिस का मतलब लोगों पर बहुत भय, डर और घबराहट का होना है, यह क़यामत से पहले होगा और उस के साथ ही दुनिया की तबाही हो जायेगी, या यह क़यामत के बाद उस समय होगा, जब लोग क़ब्रों से उठकर हश्र के मैदान में जमा होंगे.। ज़्यादातर मुफ़स्सिर (व्याख्याकार) पहले विचार से सहमत हैं जबकि कुछ मुफ़स्सिर दूसरे विचार के हक़ (पक्ष) में हैं।

५. हे लोगो! अगर तुम्हें मरने के बाद ज़िन्दा होने में शक है, तो सोचो हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य (मनी) से, फिर ख़ून के थक्के से, फिर गोश्त के लोथड़े से जो रूप दिया गया था और बिना रूप था। यह हम तुम पर वाज़ेह कर देते है और हम जिसे चाहें एक मुक़र्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक माँ के रिहम में रखते हैं फिर तुम्हें बच्चे के रूप में दुनिया में लाते हैं, फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुँचो, तुम में से कुछ वे हैं जो मर जाते हैं और कुछ खूसट उम्र (जीर्ण आयु) की तरफ़ फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह एक चीज़ से परिचित होने के बाद दोबारा अंजान हो जाये। तू देखता है कि धरती बंजर और सूखी है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह उभरती है और फूलती है और हर तरह की सुन्दर वनस्पति उगाती है।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِن كُنتُمْ فِى رَيْبٍ مِّنَ ٱلْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ وَنُقِرُّ فِى ٱلْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوٓا۟ أَشُدَّكُمْ ۖ وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰٓ أَرْذَلِ ٱلْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى ٱلْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَآ أَنزَلْنَا عَلَيْهَا ٱلْمَآءَ ٱهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنۢبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيجٍ ﴿5﴾

६. यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है और वह हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ ٱللَّهَ هُوَ ٱلْحَقُّ وَأَنَّهُۥ يُحْىِ ٱلْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ ﴿6﴾

७. और यह कि क़यामत ज़रूर ही आने वाली है जिस में कोई शक और शुब्हा नहीं, और बेशक अल्लाह (तआला) क़ब्र वालों को दोबारा ज़िन्दा करेगा।

وَأَنَّ ٱلسَّاعَةَ ءَاتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ ٱللَّهَ يَبْعَثُ مَن فِى ٱلْقُبُورِ ﴿7﴾

८. और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बिना इल्म के और बिना हिदायत के और बिना किसी रौशन किताब के झगड़ते हैं।

وَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يُجَٰدِلُ فِى ٱللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَٰبٍ مُّنِيرٍ ﴿8﴾

९. अपनी पहलू मोड़ने वाला बनकर इसलिए कि अल्लाह के रास्ते से भटका (गुमराह कर) दे। वह दुनिया में भी अपमानित (ज़लील) होगा और क़यामत (प्रलय) के दिन भी हम उसे नरक में जलने का अज़ाब चखायेंगे।

ثَانِىَ عِطْفِهِۦ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۖ لَهُۥ فِى ٱلدُّنْيَا خِزْىٌ ۖ وَنُذِيقُهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ عَذَابَ ٱلْحَرِيقِ ﴿9﴾

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿10﴾

१०. यह उन अमलों की वजह से जो तेरे हाथों ने आगे भेज रखे थे, यक़ीन (विश्वास) करो कि अल्लाह (तआला) अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ ِۨاطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ِۨانْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿11﴾

११. और कुछ लोग ऐसे भी हैं कि एक किनारे पर होकर अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हैं, अगर कोई फ़ायेदा मिल जाये तो मुत्मईन होते हैं और अगर कोई दुख आ गया तो उसी समय विमुख हो जाते हैं।[1] उन्होंने दोनों लोक का नुक़सान उठा लिया, हक़ीक़त में यह साफ़ नुक़सान है।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ﴿12﴾

१२. वह अल्लाह के सिवाय उन्हें पुकारते हैं जो न नुक़सान पहुँचा सकें न फ़ायेदा, यही तो दूर का भटकाव है।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗۤ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ؕ لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ﴿13﴾

१३. उसे पुकारते हैं जिसका नुक़सान उस के फ़ायदे से क़रीब है, बेशक बुरे संरक्षक (निगरां) हैं और बुरे दोस्त।

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ﴿14﴾

१४. बेशक ईमान और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) लहरें लेती हुई नहरों वाले जन्नत में ले जायेगा। अल्लाह जो इरादा करे उसे कर के रहता है।

---

[1] حرف का मतलब है किनारा। इन किनारों पर खड़ा होने वाला स्थिर (मुस्तक़िल) नहीं होता यानी उसे सुकून और जमाव नहीं होता, उसी तरह जो इंसान दीन के बारे में शक और शुब्हा का शिकार रहता है, उसकी भी हालत इसी तरह होती है, उसे धर्म पर स्थिरता नहीं मिलती, उसका मक़सद केवल दुनियावी फ़ायेदा होता है, अगर मिलते रहें तो ठीक है, नहीं तो वह दोबारा अपने पुराने धर्म यानी कुफ़्र और शिर्क की तरफ़ लौट जाता है, इस के ख़िलाफ़ जो सच्चे मुसलमान होते हैं और ईमान और यक़ीन से भरपूर होते हैं, वे तंगी और देखे बिना दीन पर मज़बूत रहते हैं, अगर नेमतें हासिल हों तो शुक्रिया अदा करते हैं और अगर कष्टों से पीड़ित होते हैं तो सब्र और सहन करते हैं।

१५. जिसका यह ख़्याल हो कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल की मदद दोनों जहाँ में न करेगा, वह ऊँचाई पर एक रस्सा बाँधकर (अपने गले में फंदा फाँस ले) और गला घूँट ले फिर देख ले कि उसकी चालाकी से वह बात हट जाती है, जो उसे तड़पा रही है।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ﴿15﴾

१६. और हम ने इसी तरह इस क़ुरआन को खुली आयतों में उतारा है, और जिसे अल्लाह चाहे हिदायत अता करता है।

وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ وَّاَنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يُّرِيْدُ ﴿16﴾

१७. ईमानवाले और यहूदी और विधर्मी (बद्दीन) और इसाई और आग के पुजारी[1] और मूर्तिपूजक उन सब के बीच क़यामत के दिन अल्लाह (तआला) ख़ुद फ़ैसला कर देगा, अल्लाह (तआला) हर चीज का गवाह है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ﴿17﴾

१८. क्या तू नहीं देख रहा है कि अल्लाह के सामने सज्दे में हैं सभी आकाशों वाले और धरती वाले और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और जानदार[2] और बहुत से इंसान भी। हाँ बहुत से वे भी हैं जिन पर अज़ाब साबित हो चुका है, और जिसे रब बेइज़्ज़त कर दे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, अल्लाह जो चाहता है करता है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۗ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ ۩ ﴿18﴾

---

[1] مجوس से मुराद ईरान के अग्निपूजक हैं जो दो देवताओं में यक़ीन रखते हैं। एक अंधेरा पैदा करने वाला है दूसरा उजाले का, जिसे वे अहरमन और यज़दाँ कहते हैं।

[2] कुछ मुफ़स्सिरों ने इस सज्दे से उन सभी चीज़ों को अल्लाह के हुक्म के अधीन (ताबे) होने मतलब लिया है, किसी में ताक़त नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी कर सके, उन के क़रीब सज्दा और उपासना और इबादत (वंदना) के मतलब में नहीं जो केवल अक़्ल वाले ज़िंदों के लिए ख़ास है, जबकि कुछ मुफ़स्सिरों ने इसे ख़्याल के बजाये वास्तविक (हक़ीक़ी) मायेना में लिया है कि हर सृष्टि (मख़लूक़) अपने-अपने रूप से अल्लाह के सामने सज्दा कर रही है।

هَٰذَانِ خَصْمَانِ اخْتَصَمُوا فِي رَبِّهِمْ ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن نَّارٍ يُصَبُّ مِن فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَمِيمُ (19)

१९. ये दोनों अपने रब के बारे में इख़्तिलाफ़ रखने वाले हैं, तो काफ़िरों के लिए आग के कपड़े नाप कर काटे जायेंगे और उन के सिरों के ऊपर से गर्म पानी की धारा बहायी जायेगी।

يُصْهَرُ بِهِ مَا فِي بُطُونِهِمْ وَالْجُلُودُ (20)

२०. जिस से उन के पेट की सब चीज़ें और खालें गला दी जायेंगी।

وَلَهُم مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيدٍ (21)

२१. और उन की सज़ा के लिए लोहे के हथौड़े हैं।

كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ (22)

२२. यह जब भी वहाँ के दुख से निकल भागने का इरादा करेंगे, वहीं लौटा दिये जायेंगे और (कहा जायेगा) जलने के अज़ाब का मज़ा चखो।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ (23)

२३. बेशक ईमानवालों और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) उन जन्नत में ले जायेगा जिन के नीचे से नहरें लहरें ले रही हैं, जहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाये जायेंगे और सच्चे मोती भी, वहाँ उनका कपड़ा शुद्ध (ख़ालिस) रेशम का होगा।

وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ (24)

२४. और उन्हें पाक कलाम का रास्ता दिखा दिया गया और तारीफ़ वाले (अल्लाह के) मार्गदर्शन दिया गया।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَن يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ (25)

२५. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोकने लगे और वह इज़्ज़त वाली मस्जिद से भी[1] जिसे हम ने सभी लोगों के लिए बराबर कर दिया है, वहीं के वासी हों या बाहर के हों जो भी ज़ुल्म के साथ वहाँ गुमराह होने का विचार करेगा[2] हम उसे दुख वाले अज़ाब का

---

[1] रोकने वालों से मुराद मक्का के काफ़िर हैं, जिन्होंने ६ हिजरी में मुसलमानों को मक्का जाकर "उमरह" करने से रोक दिया था, मुसलमानों को हुदैबिया नाम की जगह से वापस आना पड़ा था।

[2] الحاد का शाब्दिक (लफ़्ज़ी) मायेना तो गुमराह होना है। यहाँ यह आम है कुफ़्र और शिर्क से लेकर हर तरह के पाप के लिए। यहाँ तक कि कुछ उलेमा क़ुरआनी लफ़्ज़ों की बुनियाद पर

मजा चखायेंगे।

२६. और जब कि हम ने इब्राहीम के लिए कआबा घर की जगह मुक़र्रर कर दिया[1] (इस शर्त के साथ) कि मेरे साथ किसी को शामिल न करना[2] और मेरे घर को तवाफ़ करने, खड़े होने, झुकने (रूकूअ) और सज्दा करने वालों के लिए शुद्ध (ख़ालिस) और पाक रखना।

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَٰهِيمَ مَكَانَ ٱلْبَيْتِ أَن لَّا تُشْرِكْ بِى شَيْـًٔا وَطَهِّرْ بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِينَ وَٱلْقَآئِمِينَ وَٱلرُّكَّعِ ٱلسُّجُودِ ﴿26﴾

२७. और लोगों में हज का एलान कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आयेंगे और दुबले-पतले ऊंटों पर भी दूर दराज के सभी रास्तों से आयेंगे।

وَأَذِّن فِى ٱلنَّاسِ بِٱلْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿27﴾

२८. अपना फ़ायेदा हासिल करने के लिए आ जायें और उन मुक़र्रर दिनों में अल्लाह के नाम को याद करें उन चौपायों पर जो पालतू हैं, तो तुम आप भी खाओ और भूखे फ़क़ीरों को भी खिलाओ।

لِّيَشْهَدُوا مَنَٰفِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا ٱسْمَ ٱللَّهِ فِىٓ أَيَّامٍ مَّعْلُومَٰتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُم مِّنۢ بَهِيمَةِ ٱلْأَنْعَٰمِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا ٱلْبَآئِسَ ٱلْفَقِيرَ ﴿28﴾

इस बात का यक़ीन करते हैं कि हरम में अगर किसी तरह के गुनाह का इरादा बना लेगा (चाहे उसे अमली तौर पर करे या न करे) तो वह भी इस चेतावनी (तंबीह) में शामिल है। कुछ कहते हैं कि सिर्फ़ इरादे की वजह से पकड़ नहीं होगी, जैसाकि दूसरे क़ुरआन के लफ़्ज़ों से मालूम होता है, लेकिन अगर पक्का इरादा कर लिया हो तो पकड़ हो सकती है। (फ़तहुल क़दीर)

[1] यानी बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का मुक़ाम बता दिया और वहाँ इब्राहीम की औलाद को बसा दिया। इस से मालूम होता है कि तूफ़ाने नूह की तबाही के बाद ख़ानये काबा की तामीर सब से पहले हज़रत इब्राहीम के हाथों हुई। जैसाकि सहीह हदीस से यह बात साबित है, जैसाकि नबी ﷺ ने फ़रमाया : "सब से पहले जो मस्जिद धरती पर बनायी गयी, मस्जिदे हराम है और उस के चालीस साल बाद मस्जिदे अक़्सा बनाई गई।" (मुसनद अहमद)

[2] यह ख़ानये काबा बनाने का मक़सद बयान किया गया है कि इस में केवल मेरी इबादत की जाये, इस से यह बताने का मक़सद है कि मूर्तिपूजकों ने इस में जो मूर्तियाँ सजा रखी हैं, जिनकी वह यहाँ आकर पूजा करते हैं, यह खुला ज़ुल्म है कि जहाँ केवल अल्लाह की इबादत की जानी चाहिए थी, वहाँ मूर्तियों की पूजा की जाती है।

ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿29﴾

२९. फिर वे अपना मैल-कुचैल दूर करें[1] और अपनी मन्नत पूरी करें और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ करें।

ذَٰلِكَ وَمَن يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِندَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ﴿30﴾

३०. यह है, और जो कोई अल्लाह की हुरमतों (निषेधाज्ञा) का एहतेराम करे, उसके अपने लिए उस के रब के पास अच्छाई है, और तुम्हारे लिए चौपाये जानवर हलाल (मान्य) कर दिये गये सिवाय उन के जो तुम्हारे सामने बयान किये गये हैं, तो तुम्हें मूर्तियों की गन्दगी से बचते रहना चाहिए[2] और झूठी बातों से भी परहेज करना चाहिये।

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿31﴾

३१. अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) को कुबूल करते हुए[3] उस के साथ किसी को न साझी बनाते हुए। (सुनो!) अल्लाह का साझी बनाने वाला जैसे आकाश से गिर पड़ा, अब या तो उसे पक्षी उचक ले जायेंगे या हवा किसी दूर दराज जगह पर फेंक देगी।[4]

---

[1] यानी १० जिलहिज्जा को बड़े जमरः को कंकरियाँ मारने के बाद पूरे बाल कटवा कर या छोटे करा कर एहराम खोल दिया जाता है और पत्नी से सहवास (जिमाअ) करने के सिवाय वे सभी काम उस के लिए जायेज हो जाते है जो एहराम की हालत में हराम थे। मैल-कुचैल दूर करने का मतलब यही है कि वह बालों और नाखूनों वगैरह को साफ कर लें, तेल खुश्बू इस्तेमाल कर लें और सिले हुए कपड़े पहन लें आदि (वगैरह)।

[2] رجس का मतलब नापाकी और गन्दगी है, यहाँ इस से मुराद लकड़ी, लोहा या दूसरी किसी चीज की बनी हुई मूर्तियाँ हैं। मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की पूजा करना अपवित्रता (नापाकी) है और अल्लाह के गजब और नाराजगी की वजह है, इससे बचें।

[3] حنفاء बहुवचन (जमा) है حنيف का। जिसका शाब्दिक अर्थ (लफ़्जी मायने) है आकर्षित (मुतविज्जह) होना, एक तरफ होना, एक पक्षीय (जानिब) होना, यानी शिर्क (मूर्तिपूजा) से तौहीद (एकेश्वरवाद) की तरफ और कुफ्र और झूठ से इस्लाम और सच्चे दीन की तरफ आकर्षित होते हुए या एक पक्षीय होकर शुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हुए।

[4] यानी जिस तरह बड़े पक्षी, छोटे जीव को बहुत तेजी से झपटकर नोच खाते है, या हवायें किसी को दूर दराज जगहों पर ले जाकर फेंक दें और कभी को उसकी खबर न मिले, दोनों हालतों में बरबादी उस की तक़दीर में है। उसी तरह वह इंसान जो एक अल्लाह की इबादत करता है,

ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ﴿32﴾

३२. यह सुन लिया, (और सुनो) अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) का जो इज़्ज़त और एहतेराम (सम्मान और आदर) करे तो उस के दिल की परहेज़गारी की वजह यह है ।[1]

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ﴿33﴾

३३. उन में तुम्हारे लिए एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए फ़ायेदा है, फिर उन के क़ुर्बानी करने (बलि चढ़ाने) की जगह ख़ानये काबा है ।[2]

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ۗ فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ۗ وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ﴿34﴾

३४. और हर उम्मत के लिए हम ने क़ुर्बानी का तरीक़ा मुक़र्रर किया है ताकि वे उन चौपाये जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दे रखा है । (समझ लो) तुम सब का सच्चा माबूद सिर्फ़ एक ही है, तुम उसी के ताबे और फ़रमाबर्दार बन जाओ, आजिज़ी करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए ।

वह सही बरताव और रूहानी पाकी के मुताबिक़ और इख़्लास पाकीज़गी के सिरे पर पहुँचा होता है और जैसे ही वह शिर्क का काम करता है तो जैसे कि अपने आप को ऊँची जगह से नीचे और सफ़ाई से गन्दगी और कीचड़ में गिरा लेता है ।

[1] شعائر बहुवचन (जमा) है شعيرة का, जिसका मतलब इशारा और निशानी है, जैसे लड़ाई में एक इशारा (मख़्सूस लफ़्ज़ निशानी और संकेत के रूप में) इस्तेमाल कर लिया जाता है, जिस से वे आपस में एक-दूसरे को पहचान लेते हैं । इस आधार पर अल्लाह की निशानियाँ वे हैं जो दीन के निशान यानी इस्लाम के वाज़ेह अहकाम हैं, जिस से एक मुसलमान का मुक़ाम और मर्तबा साबित होता है और दूसरे दीन के मानने वालों से अलग पहचान लिया जाता है । सफ़ा और मरवह पहाड़ों को भी इसीलिए अल्लाह की निशानियाँ कहा गया है कि मुसलमान हज और उमरह में इनके बीच सई करते (दौड़ते) हैं । यहाँ हज की दूसरी रीतियों (मनासिक) ख़ास तौर से क़ुर्बानी (बलि) के जानवरों को अल्लाह की निशानी कहा गया है, उन के एहतेराम का मतलब उनका अच्छा और मोटा करना है यानी सेहतमंद और मोटे जानवर की क़ुर्बानी देना । इस एहतेराम को अल्लाह का दिली ख़ौफ़ कहा गया है यानी यह दिल के उन अमलों में से है जिन की बुनियाद (संयम) अल्लाह का डर है ।

[2] हलाल (उचित) होने से मुराद जहाँ इनकी क़ुर्बानी करना (उचित) है, यानी यह जानवर हज के काम पूरे करने के बाद बैतुल्लाह और मक्का की हरम की सीमा में पहुँचते हैं और वहाँ अल्लाह के नाम पर क़ुर्बानी दे दिये जाते हैं, तो उपरोक्त (मज़कूरा) फ़ायेदा भी ख़त्म हो जाता है, और अगर वे वैसे ही हरम के लिए क़ुर्बान होते हैं तो हरम पहुँचते ही क़ुर्बानी कर दिये जाते हैं और मक्का के ग़रीबों में उनका गोश्त बाँट दिया जाता है ।

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿35﴾

३५. उन्हें कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाये उन के दिल काँप जाते हैं, उन्हें जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र करते हैं, नमाज क़ायम करने वाले हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है वे उस में से भी देते रहते हैं।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿36﴾

३६. क़ुर्बानी के ऊँट को[1] हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के निशान मुक़र्रर कर दिये हैं उन में तुम्हें फ़ायदा है, तो उन्हें खड़ा कर के उन पर अल्लाह का नाम पढ़ो।[2] फिर जब उन के पहलु (पार्शव) धरती से लग जायें तो उसे ख़ुद भी खाओ[3] और ग़रीब भिखारी और जो भिखारी न हो उसे भी खिलाओ, इसी तरह हम ने चौपाये को तुम्हारे तावेदार (अधीन) कर दिया है कि तुम शुक्रिया अदा करो।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ۚ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿37﴾

३७. अल्लाह (तआला) को क़ुर्बानी के गोश्त नहीं पहुँचते न उन के ख़ून, बल्कि उसे तो तुम्हारी दिली परहेज़गारी पहुँचती है। उसी तरह अल्लाह ने उन जानवरों को तुम्हारा आज्ञाकारी (तावे) कर दिया है कि तुम उस की हिदायत (के शुक्रिया) में उस की बड़ाई का बयान करो और नेक काम करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिए।

---

[1] بُدْنٌ बहुवचन (जमा) है بدنة का। यह जानवर आम तौर से मोटा-ताज़ा होता है, इसलिए بدنة कहा जाता है मोटा-ताज़ा जानवर, भाषाविदों (लुग़त वालों) ने इसे केवल ऊँटों के साथ ख़ास तौर से इस्तेमाल किया है, लेकिन हदीस के अनुसार गाय के लिए भी بدنة लफ़्ज़ का इस्तेमाल ठीक है, मतलब यह है कि ऊँट और गाय जो क़ुर्बानी करने के लिये ले जायें, वह भी अल्लाह की निशानी है, यानी अल्लाह के उन हुक्मों में से है जो मुसलमानों के लिए ख़ास और उनकी निशानी हैं।

[2] صَوَآفّ، مصفوفة (सफ़बंद यानी खड़े हुए) के मतलब में है, ऊँट को इसी तरह खड़े-खड़े ज़िब्ह किया जाता है कि बायाँ हाथ पैर उसका बँधा हुआ हो और तीन पैर पर वह खड़ा होता है।

[3] कुछ आलिमों के क़रीब यह हुक्म फ़र्ज़ है यानी क़ुर्बानी का गोश्त खाना, क़ुर्बानी करने वाले के लिए वाजिब (आवश्यक) है और ज़्यादातर आलिमों के क़रीब यह हुक्म अच्छाई के लिए है।

إِنَّ اللَّهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾

३८. (सुन रखो!) बेशक सच्चे ईमानवालों के दुश्मनों को अल्लाह (तआला) ख़ुद हटा देता है, कोई ख़्यानत करने वाला (विश्वासघाती) नाशुक्रा अल्लाह (तआला) को प्यारा नहीं।

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

३९. जिन (मुसलमानों) से (काफ़िर) लड़ाई कर रहे हैं उन्हें भी लड़ने की इजाज़त दी जाती है क्योंकि वे मज़लूम हैं, बेशक उनकी मदद के लिए अल्लाह पूरी क़ुदरत रखता है।

الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

४०. ये वे हैं जिन्हें बिला वजह अपने घरों से निकाला गया, केवल उन के इस कहने पर कि हमारा रब केवल अल्लाह है। अगर अल्लाह (तआला) लोगों को आपस में एक-दूसरे से न हटाता रहता तो इबादत की जगह और गिरजाघर, और मस्जिदें, और यहूदियों की इबादत और वे मस्जिदें भी ढा दी जातीं जहाँ अल्लाह का नाम बहुत ज़्यादा लिया जाता है, जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह भी उस की ज़रूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह (तआला) बहुत ताक़तवर और प्रभावशाली (ग़ालिब) है।

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَأَمَرُوا بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنكَرِ ۗ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

४१. ये वे लोग हैं कि अगर हम इन के पैर धरती पर मज़बूत कर दें तो यह पाबन्दी से नमाज़ अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे कामों का हुक्म देंगे और बुरे कामों से मना करेंगे[1] और सभी कामों का नतीजा अल्लाह के अधिकार (इख़्तियार) में है।

وَإِن يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودُ ﴿٤٢﴾

४२. और अगर ये लोग आप को झुठलायें (तो ताज्जुब की बात नहीं) तो इन से पहले नूह की क़ौम और आद और समूद।

[1] इस आयत में इस्लामी मुल्क के बुन्यादी मक़ासिद बयान किये गये हैं, जिन्हें ख़िलाफ़ते राशिदा और पहली सदी के दूसरे इस्लामी राज्यों में लागू किया गया और उन्होंने अपने दस्तूर में इन को प्राथमिकता (तरजीह) दी, जिस के सबब उन के राज्यों में शान्ति (अमन) थी, प्रेम भावना (ख़ैरख़ाही) और ख़ुशहाली भी रही और मुसलमानों के सिर ऊँचे और इज़्ज़त वाले भी थे।

وَقَوۡمُ إِبۡرَٰهِيمَ وَقَوۡمُ لُوطٖ ﴿43﴾

४३. और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम।

وَأَصۡحَٰبُ مَدۡيَنَۖ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ فَأَمۡلَيۡتُ لِلۡكَٰفِرِينَ ثُمَّ أَخَذۡتُهُمۡۖ فَكَيۡفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿44﴾

४४. और मदयन वाले भी अपने-अपने नबियों को झुठला चुके हैं। मूसा भी झुठलाये जा चुके हैं, तो मैंने काफ़िरों को थोड़ा सा मौक़ा दिया फिर धर पकड़ा,[1] फिर मेरा अज़ाब कैसा हुआ?

فَكَأَيِّن مِّن قَرۡيَةٍ أَهۡلَكۡنَٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٞ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبِئۡرٖ مُّعَطَّلَةٖ وَقَصۡرٖ مَّشِيدٍ ﴿45﴾

४५. बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने हलाक कर दिया इसलिए कि वे ज़ालिम थीं तो वे अपनी छतों के बल औंधी पड़ी हैं, और बहुत से आबाद कुऐं बेकार पड़े हैं और बहुत से पक्के और ऊँचे क़िले सुनसान पड़े हैं।

أَفَلَمۡ يَسِيرُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ فَتَكُونَ لَهُمۡ قُلُوبٞ يَعۡقِلُونَ بِهَآ أَوۡ ءَاذَانٞ يَسۡمَعُونَ بِهَاۖ فَإِنَّهَا لَا تَعۡمَى ٱلۡأَبۡصَٰرُ وَلَٰكِن تَعۡمَى ٱلۡقُلُوبُ ٱلَّتِي فِي ٱلصُّدُورِ ﴿46﴾

४६. क्या उन्होंने धरती में सैर करके नहीं देखा, जो उन के दिल इन बातों को समझते या कानों से ही इन (घटनाओं) को सुन लेते, बात यह है कि केवल आँखें ही अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

وَيَسۡتَعۡجِلُونَكَ بِٱلۡعَذَابِ وَلَن يُخۡلِفَ ٱللَّهُ وَعۡدَهُۥۚ وَإِنَّ يَوۡمًا عِندَ رَبِّكَ كَأَلۡفِ سَنَةٖ مِّمَّا تَعُدُّونَ ﴿47﴾

४७. और वे अज़ाब की आप से जल्दी माँग कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) कभी अपना वादा नहीं टालेगा, हाँ बेशक आप के रब के क़रीब एक दिन आप की गिनती के अनुसार (मुताबिक़) एक हज़ार साल का है।

وَكَأَيِّن مِّن قَرۡيَةٍ أَمۡلَيۡتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٞ ثُمَّ أَخَذۡتُهَا وَإِلَيَّ ٱلۡمَصِيرُ ﴿48﴾

४८. और बहुत सी ज़ुल्म करने वाली बस्तियों को हम ने ढील दी, फिर आख़िर में उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौटकर आना है।

قُلۡ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّمَآ أَنَا۠ لَكُمۡ نَذِيرٞ مُّبِينٞ ﴿49﴾

४९. एलान कर दो कि हे लोगो! मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सचेत (आगाह) करने वाला हूँ।

---

[1] इस में नबी ﷺ को सांत्वना (तसल्ली) दी जा रही है कि यह मक्का के काफ़िर अगर आप को झुठला रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है। पहले की क़ौमें भी अपने पैग़म्बरों के साथ ऐसा ही मुआमला (व्यवहार) करती रही हैं और मैं भी उन्हें मौक़ा देता रहा और जब उन के मौक़ा का समय ख़त्म हो गया तो उन्हें तबाह कर दिया गया।

فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿50﴾

५०. तो जो ईमान लाये है और उन्होंने नेक काम किये है उन्ही के लिए मोक्ष (मग़फ़िरत) है और सम्मानित जीविका (रोज़ी)।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿51﴾

५१. और जो लोग हमारी आयतों को नीचा देखाने में लगे हैं, वही नरकवासी हैं।

وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّآ اِذَا تَمَنّٰٓى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْٓ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿52﴾

५२. और हम ने आप से पहले जिस रसूल और नबी को भेजा, (उस के साथ यह हुआ कि) जब वह अपने दिल में कोई ख़्वाहिश करने लगा, शैतान ने उसकी कामना में कुछ मिला दिया तो शैतान की मिलावट को अल्लाह (तआला) दूर कर देता है, फिर अपनी बातें मज़बूत कर देता है, अल्लाह (तआला) जानने वाला और हिक्मत वाला है।

لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِى الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿53﴾

५३. यह इसलिए कि शैतानी मिलावट को अल्लाह (तआला) उन लोगों की परीक्षा (इम्तेहान) का सामान बना दे, जिन के दिलों में रोग है और जिन के दिल सख़्त हैं। बेशक ज़ालिम लोग घोर विरोध (इख़्तिलाफ़) में हैं।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ۗ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿54﴾

५४. और इसलिए भी कि जिन्हें इल्म अता किया गया है, वे विश्वास कर लें कि यह आप के रब ही की तरफ़ से पूरा सच है, फिर वे उस पर ईमान लायें और उन के दिल उस की तरफ़ झुक जायें। बेशक अल्लाह (तआला) ईमानवालों को सच्चे रास्ते की तरफ़ हिदायत करने वाला ही है।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿55﴾

५५. और काफ़िर उस अल्लाह की वह्यी में हमेशा शक और शुब्हा ही करते रहेंगे यहाँ तक कि अचानक उन के सिर पर क़यामत (प्रलय) आ जाये, या उन के क़रीब उस दिन का अज़ाब आ जाये जो भलाई से ख़ाली है।[1]

---

[1] يوم عقيم (बाझ दिन) से मुराद क़यामत का दिन है, इसे बाझ इसलिए कहा गया है कि इस दिन के बाद कोई दिन नही होगा, जिस तरह बाझ उसको कहा जाता जिस के कोई औलाद न हो।

ٱلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۚ فَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّـٰلِحَـٰتِ فِى جَنَّـٰتِ ٱلنَّعِيمِ (56)

५६. उस दिन केवल अल्लाह ही का राज होगा, वही उन के बीच फ़ैसला करेगा, ईमान वाले और नेक लोग तो सुखों से भरपूर जन्नत में होंगे।

وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَكَذَّبُوا۟ بِـَٔايَـٰتِنَا فَأُو۟لَـٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ (57)

५७. और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया, उन के लिए रुस्वा करने वाले अजाब हैं।

وَٱلَّذِينَ هَاجَرُوا۟ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوٓا۟ أَوْ مَاتُوا۟ لَيَرْزُقَنَّهُمُ ٱللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ ٱلرَّٰزِقِينَ (58)

५८. और जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ा फिर वे शहीद कर दिये गये या अपनी मौत से मर गये, अल्लाह (तआला) उन्हें बेहतर रोज़ी अता करेगा, और बेशक अल्लाह (तआला) सब से अच्छा रिज़्क़ अता करने वाला है।

لَيُدْخِلَنَّهُم مُّدْخَلًا يَرْضَوْنَهُۥ ۗ وَإِنَّ ٱللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ (59)

५९. उन्हें अल्लाह (तआला) ऐसी जगह पर पहुँचायेगा कि वे उस से ख़ुश हो जायेंगे। बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला और बरदाश्त करने वाला है।

ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِۦ ثُمَّ بُغِىَ عَلَيْهِ لَيَنصُرَنَّهُ ٱللَّهُ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَعَفُوٌّ غَفُورٌ (60)

६०. बात यही है, और जिस ने बदला लिया उसी की तरह जो उस के साथ किया गया था, फिर अगर उस के साथ ज़्यादती की जाये तो बेशक अल्लाह (तआला) ख़ुद उसकी मदद करेगा।[1] बेशक अल्लाह (तआला) छोड़ देने

या इसलिए कि काफ़िरों के लिए उस दिन कोई दया नहीं होगी, यानी उन के लिए भलाई से खाली होगा, जिस तरह तेज चाल की हवाओं को जो अजाब के तौर पर आती रही हैं 'बाँझ हवा' कहा गया है।

[1] عقوبت उस सजा या बदले को कहते हैं जो किसी अमल का बदला हो। मतलब यह है कि किसी ने किसी के साथ ज़्यादती की हो तो जिस से ज़्यादती की गयी है, उसे ज़्यादती के समान बदला लेने का हक़ है, लेकिन बदला लेने के बाद जबकि ज़ालिम और मज़लूम (नृशंसित) दोनों समान हो चुके हों, ज़ालिम मज़लूम पर दोबारा ज़ुल्म करे तो अल्लाह तआला उस मज़लूम की ज़रूर मदद करेगा। यानी यह शक न हो कि मज़लूम ने माफ़ करने के बजाय बदला लेकर ग़लत काम किया है, नहीं, बल्कि उसकी भी इजाज़त अल्लाह ने दिया है, इसलिए भविष्य (आइन्दा) में भी वह अल्लाह की मदद का हक़दार रहेगा।

वाला और माफ़ करने वाला है।[1]

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ (61)

६१. यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश (दाख़िल) कराता है और दिन को रात में ले जाता है, और बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (62)

६२. यह सब इसलिए कि अल्लाह ही सच है, और उस के सिवाय जिसे भी यह पुकारते हैं वे झूठे (बातिल) हैं, और बेशक अल्लाह (तआला) बुलन्द बड़ाई वाला है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ (63)

६३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसाता है तो धरती हरी-भरी हो जाती है। बेशक अल्लाह (तआला) मेहरबान और जानने वाला है।

لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (64)

६४. आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है, और बेशक अल्लाह वही है बेनियाज़ तारीफ़ों वाला।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِى الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۭ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (65)

६५. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने धरती की सभी चीज़ें तुम्हारे वश में कर दी हैं, और उस के हुक्म से समुद्र में चलती हुई नावें भी। वही आकाश को थामे हुए है कि धरती पर उस के हुक्म के बिना गिर न पड़े। बेशक अल्लाह (तआला) लोगों पर शफ़क़त करने वाला रहम करने वाला है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ۡ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ (66)

६६. और उसी ने तुम्हें जिन्दा किया है फिर वही तुम्हें मारेगा, फिर वही तुम्हें जिन्दा करेगा, बेशक इंसान बड़ा नाशुक्रा है।

---

[1] इस में माफ़ कर देने की फिर शिक्षा (तालीम) दी गयी है कि अल्लाह माफ़ करने वाला है, तुम भी माफ़ी से काम लो। एक दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि बदला लेने में जितना ज़ालिम का ज़ुल्म होगा उतना ज़ुल्म किया जायेगा, इसकी इजाज़त चूँकि अल्लाह की तरफ़ से है, इसलिए इस पर पकड़ नहीं होगी बल्कि वह माफ़ी के क़ाबिल है, इसे ज़ुल्म और बुराई उस के समरूप (मुशाबिह) होने की वजह से कहा जाता है, वरन् इन्तिक़ाम या बदला असल में ज़ुल्म और ग़लती है ही नहीं।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ (67)

६७. हर एक उम्मत के लिए हम ने इबादत का एक तरीक़ा मुक़र्रर कर दिया है, जिस का वह पालन करने वाले हैं, तो उन्हें आप से इस सम्बंध (मुआमले) में झगड़ा नहीं करना चाहिए। आप अपने रब की तरफ़ लोगों को बुलायें, बेशक आप सीधे सच्चे रास्ते पर ही हैं।

وَإِن جَادَلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ (68)

६८. और फिर भी अगर ये लोग आप से उलझने लगें तो आप कह दें कि तुम्हारे अमलों से अल्लाह अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ (69)

६९. तुम्हारे सभी के इख़्तिलाफ़ का फ़ैसला क़यामत के दिन अल्लाह (तआला) ख़ुद करेगा।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّ ذَٰلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ (70)

७०. क्या आप ने नहीं जाना कि आकाश और धरती की हर चीज़ अल्लाह के इल्म में है, यह सब लिखी हुई किताब में महफ़ूज़ है, अल्लाह (तआला) के लिए यह काम बड़ा आसान है।[1]

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُم بِهِ عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصِيرٍ (71)

७१. और ये अल्लाह (तआला) के सिवाय उन्हें पूज रहे हैं जिसका कोई आसमानी सुबूत नहीं, और न वे ख़ुद ही इसका कोई इल्म (ज्ञान) रखते हैं, ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

---

[1] इस में अल्लाह तआला ने अपने सारे इल्म और मख़लूक़ को घेर रखने का बयान किया है, यानी उसकी सृष्टि (मख़लूक़) को जो कुछ करना था उसको इसका इल्म पहले से ही था, वह उनको जानता था। इसलिए उस ने अपने इल्म से यह बातें पहले ही से लिख दी और लोगों को यह बात चाहे कितनी ही कठिन लगे, अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है, यह वही तक़दीर की समस्या (मसअला) है जिस पर ईमान रखना ज़रूरी है, जिसे हदीस में इस तरह बयान किया गया है: "अल्लाह तआला ने आकाश और धरती की पैदाईश से पचास हज़ार साल पहले जबकि उसका अर्श पानी पर था, सृष्टि की तक़दीर लिख दिये थे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हिजाज आदम व मूसा) और सुनन के क़ौल में हैं, रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला ने सब से पहले क़लम पैदा किया, और उस से कहा लिख, उस ने कहा क्या लिखूँ? अल्लाह तआला ने कहा जो कुछ होने वाला है सब लिख दे, इसलिए उस ने अल्लाह के हुक्म से क़यामत तक जो कुछ होने वाला था सब लिख दिया।" (अबू दाऊद, किताबुस सुन्न: बाबुन फ़िल क़द्र, तिर्मिज़ी अबवाबुल क़द्र तफ़सीर सूर: नून, मुसनद अहमद, भाग ५।३१७)

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنكَرَ ۖ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا ۗ قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكُمُ ۗ النَّارُ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ (72)

७२. और जब उन के सामने हमारे कलाम की खुली आयतों की तिलावत (पाठ) किया जाता है, तो आप काफ़िरों के मुंह पर नाख़ुशी के आसार साफ़ तौर पर पहचान लेते हैं, वे तो क़रीब होते हैं कि हमारी आयतों के सुनाने वाले पर हमला कर बैठें। कह दीजिए क्या मैं तुम्हें इस से भी ज़्यादा बुरी ख़बर दूँ, वह आग है जिस का वादा अल्लाह ने काफ़िरों से कर रखा है, और वह बहुत बुरी जगह है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ ۖ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ۚ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ (73)

७३. हे लोगो! एक मिसाल दी जा रही है, ज़रा ध्यान से सुनो, अल्लाह के सिवाय तुम जिन-जिन को पुकारते रहे हो वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते अगर सारे के सारे जमा हो जायें, बल्कि अगर मक्खी उन से कोई चीज़ ले भागे तो यह तो उसे भी उस से छीन नहीं सकते। बड़ा कमज़ोर है माँगने वाला और बहुत कमज़ोर है जिस से माँगा जा रहा है।

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ (74)

७४. उन्होंने अल्लाह की बड़ाई के अनुसार (मुताबिक़) उसका महत्व (अहमियत) जाना ही नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) बड़ा ज़बरदस्त और प्रभावशाली (ग़ालिब) है।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (75)

७५. फ़रिश्तों में से और इंसानों में से रसूल को अल्लाह ही चुन लेता है,[1] बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

---

[1] رُسُل रसूल (उतारा, भेजा हुआ संदेशवाहक) का बहुवचन (जमा) है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से भी रिसालत का यानी संदेशवाहन का काम लिया है, जैसे हज़रत जिब्रील को अपनी वह्यी के लिए चुना कि वे रसूलों के पास वह्यी पहुँचायें, या अज़ाब लेकर क़ौमों के पास जायें और इंसानों में से जिन्हें चाहा रिसालत के लिए चुन लिया और उन्हें लोगों की हिदायत और नसीहत देने के लिए नियुक्त (मुंतख़ब) किया। सभी अल्लाह के बंदे थे, अगरचे चुने हुए थे, लेकिन किस लिए? अल्लाह के अधिकार (इख़्तियार) में साझीदार बनाने के लिए? जिस तरह कुछ लोगों ने उनको अल्लाह का साझी बना लिया है। नहीं, बल्कि केवल अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाने के लिए।

७६. वह अच्छी तरह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और अल्लाह ही की तरफ़ सब काम लौटाये जाते हैं।

يَعۡلَمُ مَا بَيۡنَ أَيۡدِيهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡۚ وَإِلَى ٱللَّهِ تُرۡجَعُ ٱلۡأُمُورُ (76)

७७. हे ईमानवालो! रूकूअ, सज्दा करते रहो, और अपने रब की इबादत में लगे रहो और नेकी के काम करते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ ٱرۡكَعُواْ وَٱسۡجُدُواْۤ وَٱعۡبُدُواْ رَبَّكُمۡ وَٱفۡعَلُواْ ٱلۡخَيۡرَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُونَ (77)

७८. और अल्लाह की राह में वैसे ही जिहाद करो जैसा जिहाद (धर्मयुद्ध) का हक़ है,[1] उसी ने तुम्हें निर्वाचित (मुंतख़व) किया है और तुम पर दीन के वारे में कोई कमी नहीं की, दीन अपने पिता[2] इब्राहीम का (क़ायम रखो), उसी (अल्लाह) ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। इस (क़ुरआन) से पहले और इसमें भी ताकि पैग़म्बर तुम पर गवाह हो जायें और तुम सभी लोगों के गवाह वन जाओ,[3] तो तुम्हें चाहिए कि नमाज़ें क़ायम करो और ज़कात (धर्मदान) अदा करते रहो और अल्लाह को मज़बूती से पकड़ लो, वही तुम्हारा संरक्षक (निगरां) और मालिक है, और कितना अच्छा मालिक और कितना अच्छा मदद करने वाला है।

وَجَٰهِدُواْ فِي ٱللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِۦۚ هُوَ ٱجۡتَبَىٰكُمۡ وَمَا جَعَلَ عَلَيۡكُمۡ فِي ٱلدِّينِ مِنۡ حَرَجٖۚ مِّلَّةَ أَبِيكُمۡ إِبۡرَٰهِيمَۚ هُوَ سَمَّىٰكُمُ ٱلۡمُسۡلِمِينَ مِن قَبۡلُ وَفِي هَٰذَا لِيَكُونَ ٱلرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيۡكُمۡ وَتَكُونُواْ شُهَدَآءَ عَلَى ٱلنَّاسِۚ فَأَقِيمُواْ ٱلصَّلَوٰةَ وَءَاتُواْ ٱلزَّكَوٰةَ وَٱعۡتَصِمُواْ بِٱللَّهِ هُوَ مَوۡلَىٰكُمۡۖ فَنِعۡمَ ٱلۡمَوۡلَىٰ وَنِعۡمَ ٱلنَّصِيرُ (٧٨)

---

[1] इस जिहाद से मुराद कुछ ने वह जिहाद लिया है जो अल्लाह के नाम के फैलाने के लिए काफ़िरों और मूर्तिपूजकों से किया जाता है और कुछ ने अल्लाह के हुक्मों के पालन को कहा है, क्योंकि इस में ख़्वाहिशों और शैतान का सामना करना पड़ता है, और कुछ ने हर वह कोशिश लिया है जो सच और सच्चाई को ग़ालिब बनाने और झूठ को ख़त्म करने के लिए करना पड़ता है।

[2] अरब इस्माईल की औलाद में से थे, इस बिना पर हज़रत इब्राहीम अरबों के पिता थे और ग़ैर अरब भी हज़रत इब्राहीम की एक महान व्यक्ति (अज़ीम इंसान) के रूप में इज़्ज़त करते थे, जिस तरह बेटा बाप का करते हैं, इसलिए वह सभी लोगों के पिता थे, इस के सिवाय मुसलमानों के पैग़म्बर के (अरब होने के नाते) हज़रत इब्राहीम पिता थे, इसलिए मुसलमानों के भी पिता हुए। इसलिए कहा गया कि यह दीन इस्लाम जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए चुन लिया है, तुम्हारे पिता इब्राहीम का दीन है, उसी की इत्तेबा (अनुसरण) करो।

[3] यह गवाही क़यामत के दिन होगी जैसाकि हदीस में है। (देखिये सूर: बक़र: आयत १४३ की तफ़सीर)